भाषा विज्ञान के चार प्रकार हैं:

1. वर्णनात्मक भाषा विज्ञान,
2. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान,
3. तुलनात्मक भाषा विज्ञान,
4. संरचनात्मक भाषा विज्ञान।
5. प्रायोगिक भाषा विज्ञान।

(i) वर्णनात्मक भाषा विज्ञान — जिसमें किसी एक भाषा के, किसी एक ही काल के स्वरूप की व्याख्या या वर्णन रहता है। किसी विशेषकाल में किसी भाषा में कितनी ध्वनियाँ थीं? पदसंरचना कैसी थी? वाक्य-रचना कैसी थी? आदि-आदि का इसमें विस्तार से वर्णन किया जाता है। इसमें उस विशिष्ट भाषा का पूर्ण परिचय प्राप्त हो जाता है।

(ii) ऐतिहासिक भाषा विज्ञान — जिसमें किसी एक भाषा का, उसके विभिन्न अङ्गों — ध्वनि, पदरचना, वाक्यरचना आदि के क्रमिक विकास का अध्ययन किया जाता है।

(iii) तुलनात्मक भाषा विज्ञान — जिसमें किन्हीं दो या दो से अधिक भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। जिन भाषाओं को अध्ययन का विषय बनाया जाता है, उनके विभिन्न अङ्गों की तुलना, किसी एक काल के आधार पर अथवा विभिन्न कालों के आधार पर की जाती है। यद्यपि आधुनिक काल में, अट्ठारहवीं शताब्दी के अंत में, विलियम जोन्स द्वारा इसका सूत्रपात हो गया था; किन्तु इसका पूर्ण विकास तो 19वीं शताब्दी में हुआ। उन दिनों भाषाविज्ञान का नाम ही "तुलनात्मक भाषा विज्ञान" पड़ गया था।

(iv) संरचनात्मक भाषा विज्ञान — जिसमें भाषा में प्रयुक्त सभी तत्वों का पारस्परिक विशिष्ट सन्दर्भ में क्रमशः अध्ययन किया जाता है

(v) प्रायोगिक भाषा विज्ञान — जिसके चारों पद्धतियों को प्रयोग में लाना सिखलाया जाता है अर्थात उनका व्यावहारिक ज्ञान कराया जाता है। देशी एवं विदेशी भाषा सिखलाने एवं इनी का अध्ययन करना ही प्रायो...

ध्वनि :-

भाषा की लघुतम इकाई ध्वनि है। भाषा के विभिन्न अंग है जैसे वाक्य, शब्द रूप, वर्ण, अर्थ ध्वनि इत्यादि। जिसमे ध्वनि सबसे प्रमुख एवं महत्वपूर्ण अंग है।

ध्वनि शब्द का सामान्य अर्थ है, किन्ही दो अथवा पदार्थो के परस्पर टकराने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि। ध्वनि का यहां अभिप्राय है - वे ध्वनियाँ, जिनका प्रयोग मनुष्य द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए, वाणी द्वारा किया जाता है। इस प्रकार भाषा विज्ञान में "ध्वनि" का अर्थ केवल उन ध्वनियों से है, जिनका प्रयोग मनुष्य बोलचाल में करता है और जिन्हें लिखित रूप प्रकट करने के लिए विभिन्न लिपिचिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इन लिपिचिह्नों को ही वर्ण तथा इनके समूह को ही वर्णमाला कहा जाता है।

आदिकाल से ही ध्वनि के दो भेद किये जाते है 1. स्वर
2. व्यंजन

स्वर - स्वर वे है जो स्वयं बिना किसी अन्य की सहायता से उच्चरित किये जा सके और व्यंजन-वे है जो स्वयं बिना किसी अन्य की सहायता से उच्चरित किये जा सके।

वर्गीकरण के आधार पर ध्वनि के तीन प्रमुख आधार है — 1. स्थान
2. प्रयत्न
3. करण

Scanned with CamScanner

1. स्थान — जब हम ध्वनि उत्पन्न करने के लिए निश्वास वायु को अवरुद्ध करते हैं तो वायु को अवरुद्ध या बाधित करने का यही स्थान "स्थान" कहलाता है। डा० देवेन्द्रनाथ ने उच्चारण की दृष्टि से निम्न स्थानों को मुख्य माना है —

(क) काकल
(ख) कंठ
(ग) तालु
(घ) मूर्धा,
(ङ) वर्त्स
(च) दन्त
(छ) ओष्ठ्य

इन्हीं के आधार पर ध्वनियों को नाम दिये जाते हैं जैसे - काकल्य, मूर्धन्य या ओष्ठ्य आदि। (अ) दन्त्योष्ठ्य और (आ) द्विओष्ठ्य। इन दोनों का वर्त्स है।

2. प्रयत्न :-

प्रयत्न विशेषरूप से दो प्रकार का होता है — (अ) आभ्यन्तर प्रयत्न तथा (ब) बाह्य प्रयत्न। — इसमें विवार, संवार, श्वास, नाद, अघोष, घोष अल्पप्राण और महाप्राण इत्यादि का सहयोग अनिवार्य है।

3. करण — करण का अर्थ है जो कार्य करें, अर्थात् गतिशील हो: चल हो,

Scanned with CamScanner